4.दिल्ली के सुल्तान

गुलाम सुल्तान (1206ई॰से1290ई॰तक)

- दिल्ली के सुल्तानों में आरंभिक शासक ममलूक थे| वे गुलाम बादशाह भी कहे जाते हैं| इन गुलामों में पहला शासक मोहम्मद गौरी का सेनापति (गुलाम) कुतुबुद्दीन ऐबक था|
- गौरी की म्रत्यु के उपरांत कुतुबुद्दीन ऐबक भारत में साम्राज्य स्थापित किया जिसके बाद गजनी शासकों द्वारा ऐबक के राज्य को अपने राज्य मे मिलाना चाहा लेकिन सफलता नहीं मिली|
- ऐबक के बाद इल्तुतमिश सुल्तान बना तब यह स्पष्ट हो गया उत्तर भारत एक अलग राज्य रहेगा तभी इस नए राज्य को दिल्ली सल्तनत कहा गया|
- धीरे-धीरे दिल्ली के सुल्तानों ने पूर्व में बंगाल पश्चिम में सिंध तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया | बहुत से तुर्क सरदार और गुलाम मध्य एशिया से अगर भारत बस गए सुल्तान अपने राज्य को अपने सरदारों में बांट देता था | उसके बदले में वे सुल्तान को सैनिक देते थे और सल्तनत का शासन चलाने में की सहायता करते थे|
- सरदारों को केवल भूमि का लगान दिया जाता था भूमि पर उनका कोई स्वामित्व नहीं होता था | सरदार उस प्राप्त अनुदान से सदैव असंतुष्ट रहते थे और सुल्तान के लिए उनको संतुष्ट रखना कठिन हो गया था| समस्या से निजात पाने के लिए सुल्तान ने

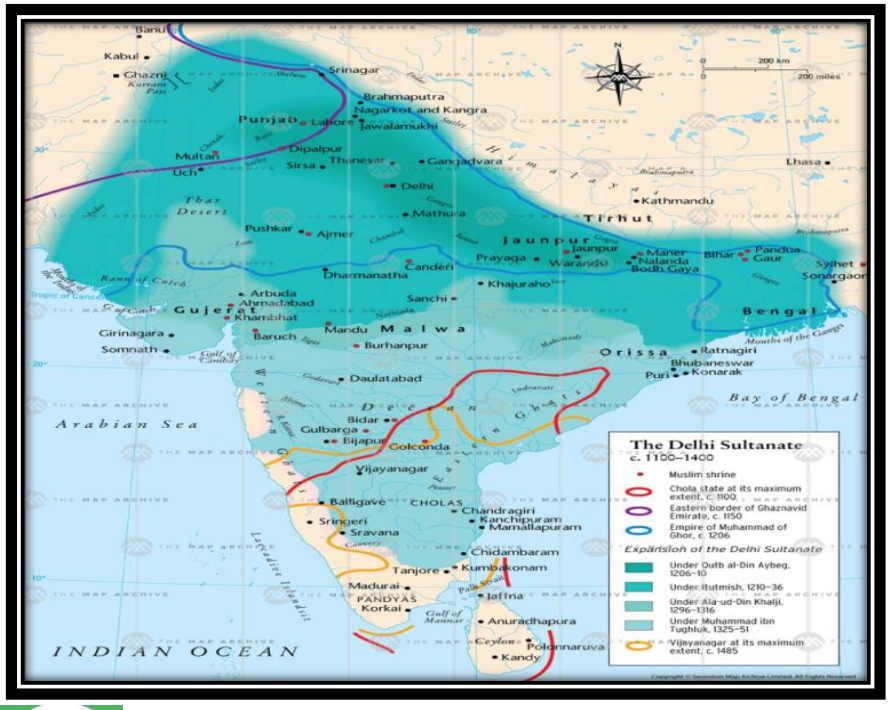

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

सरदारों को भूमि पर अधिकार दे दिया और इसके बदले सरदार सुल्तान को कर के रूप में धन और सैनिक सहयता देते थे इसमें पराजित राजपूत सरदार भी थे|

- तत्पश्चात सुल्तान के सामने एक और नई समस्या आई जो मध्य एशिया के मंगोल नेता चंगेज खां के नेतृत्व में नवीन प्रदेशों को जीत रहे थे | सिंधु नदी के किनारे का क्षेत्र उनके अधिकार में आ गया था प्रायः नदी को पार करके पंजाब पर आक्रमण करते थे|
- यह मंगोल समस्या इल्तुतमिश की पुत्री रजिया बेगम के साथ बलबन के शासन तक बना रहा| बलबन को मंगोल समस्या सुलझाने में आंशिक सफलता मिली|
- **बलबन-** बलबन साम्राज्य की आंतरिक समस्याओं को खत्म कर सुल्तान का पद सुदृढ़ करते हुए हख्मी और सासानी वंश के ईरान के महान सम्राटों के विषय में सुना था और अपने को उन्ही के समान बनाना चाहता था इसलिए उसने अपने राज्य में सिजदा और पबोश की परंपरा की शरुआत की |

खिलजी सुल्तान (1290ई० से 1320 ई० तक)

- सन 1290 ईस्वी में खिलजी वंश का शासन आरंभ हुआ | इस वंश का महत्वाकांक्षी शासक अलाउद्दीन 1296 ई० में सुल्तान हुआ |
- **अलाउद्दीन खिलजी-** उसने सुल्तान बनते ही संपूर्ण भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित करने का प्रयत्न आरंभ किया | इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए उसको तीन कार्य करने थे-
- पहला सरदारों को अपना स्वामी भक्त बनाना और उनकी शक्ति को अपने कब्जे में रखना दूसरा दक्षिण और राजस्थान को जीतना और तीसरा मंगोलों को पीछे हटने के लिए विवश करना|
- एक विशाल सेना के लिए प्रचुर धनराशि की आवश्यकता थी इसीलिए अलाउद्दीन ने गंगा जमुना के बीच के उपजाऊ क्षेत्र दोआब के धनी व्यक्तियों पर उसने भूमि कर बढ़ा दिया इसके अतिरिक्त लगान और खेती की भूमि के कर का निर्धारण किया |
- पहले उसने अपने राज्य की खेती की भूमि की नाप करवाई और फिर इस नाप के आधार पर लगान निर्धारित किया गया |
- अलाउद्दीन ने पश्चिम भारत के शासकों की ओर अपना पूरा ध्यान केंद्रित किया उसने गुजरात और मालवा के राज्यों पर चढ़ाई की रणथंभौर और चित्तौड़ के प्रसिद्ध किलो को जीतकर उसने राजस्थान पर अपना अधिकार स्थापित करना चाहा और उसने

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

दक्षिण भारत की ओर भी एक बड़ी सेना मलिक काफूर को सेनापति बनाकर भेजी | मलिक काफूर ने सभी दिशाओं में लूटमार की और देवगिरि के यादव, वारंगल के काकतीयों, द्वार समुद्र के होयासलों तथा दक्षिण भारत के अन्य राज्यों में अधिक मात्रा में सोना इकट्ठा किया|

तुगलक सुल्तान(सन 1320ई०से सन 1399ई०)

- तुगलक वंश के शासकों में मुहम्मद बिन तुगलक (1325 से 1351 ईस्वी) अधिक प्रसिद्ध था|
- इस काल में उत्तर अफ्रीका का अरब यात्री इब्नबतूता भारत में आया और उसने मुहम्मद के शासन काल में यहां के निवासियों के जीवन का विस्तार के साथ वर्णन किया|
- मुहम्मद अपनी राजधानी दिल्ली से हटाकर देवगिरी ले गया और उसका नया नाम दौलताबाद रखा| यह स्थान उत्तर भारत से दूर था और यहां से उतरी सीमा की सुरक्षा नहीं की जा सकती थी इसीलिए मुहम्मद दिल्ली लौट आया और दिल्ली एक बार फिर राजधानी बन गई इस कार्य में दक्षिण के राज्यों को सल्तनत की कमजोरी के चिन्ह दिखाई पड़े इसके बाद ही दक्षिण में दो स्वतंत्र राज्यों बहमनी राज्य और विजयनगर राज्य का उदय हुआ|
- मुहम्मद तुगलक ने पीतल और तांबे के सांकेतिक सिक्के चलाए|
- दुर्भाग्य से मुहम्मद को अपनी सभी नीतियों और योजनाओं में असफलता मिली और उससे राज्य की जनता ही नहीं उलेमा और सरदार भी असंतुष्ट हो गए|

फिरोजशाह(1351ई० से 1388ई०)

- फिरोज ने इस बात को समझ लिया मुहम्मद की असफलता का कारण यह भी था कि उसे सरदारों और उलेमाओं का सहयोग नहीं मिला फिरोज ने उनके साथ समझौता कर लिया और उनको लागत लगान का अनुदान देकर संतुष्ट रखा |
- उसने सिंचाई की योजनाएं बनाकर नहरों और इस प्रकार अपने राज्य के कुछ क्षेत्रों की उन्नति की | यमुना नहर इन्ही नहरों मे से एक है उसने फिरोजपुर, फिरोजाबाद, हिसार, फिरोजा और जौनपुर अदि नगर बसाए तथा शिक्षा संस्थाओं और अस्पतालों की संख्या मे वृधि की |

दिल्ली सल्तनत का पतन

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- सन 1398 में उत्तर भारत पर फिर मध्य एशिया की सेनाओं का आक्रमण हुआ | तुर्क सरदार तैमूर ने जिसे तैमूरलंग भी कहा जाता है, अपनी विशाल सेना लेकर भारत पर आक्रमण कर दिया | उद्देश्य केवल उत्तर भारत पर आक्रमण करना और लूट का माल लेकर मध्य एशिया लौट जाना था |
- सन 1413 ईसवी में तुगलक वंश का अंत हो गया और एक स्थानीय शासक ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया उसने अपने को सुल्तान घोषित किया और सैयद वंश (1414ई० से 1413 ई०)की स्थापना की |

लोदी वंश(1451ई० से 1526 ई०)

- **सिकंदर लोदी (1489ई० से 1517 ई०)-** उसने पश्चिमी बंगाल तक गंगा की घाटी पर अपना अधिकार कर लिया वह राजधानी को दिल्ली से हटा कर एक नया नगर में ले गया जो बाद में आगरा के नाम से प्रसिद्ध हुआ|
  (किसी भूमि भाग से लगान वसूल कर रख लेने का अनुदान इकता प्रणाली कहलाता था|)

सुल्तान की शासन प्रणाली

- इसका मुख्य संबंध भूमि का लगान वसूल करने तथा उसका हिसाब रखने के काम से था| उपज का एक तिहाई भाग लगान के रूप में लिया जाता था|
- गांव और जिले में काम करने वाले स्थानीय अधिकारी इस लगान को वसूल करते | ये अधिकारी उसी प्रकार कार्य करते थे जिस प्रकार में तुर्कों और अफ़गानों के आने से पहले किया करते थे गांव के प्रशासन की प्रणाली में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ था| कई अधिकारी ये कार्य करते थे जैसे मुकद्दम गांव का वंश परंपरागत मुखिया होता था| पटवारी स्थानीय कागजात करता था| मुशारिफ लगान वसूली के समय सहायता करता था|
- दरबार में भी ऐसे अधिकारी होते थे जो लगान का हिसाब रखते थे इन अधिकारियों में वजीर और बख्शी सबसे प्रमुख थे|

नए राज्य

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

- जैसे-जैसे सल्तनत की शक्ति कमजोर होती गई इस विशाल देश के विभिन्न भागों में बहुत से नए राज्य बनते गए|
- पश्चिम भारत में मालवा और गुजरात के राज्य थे अहमदाबाद नगर की स्थापना करने वाले अहमदशाह ने गुजरात के राज्य को शक्तिशाली बनाया|
- इस साल में कश्मीर का राज्य भी महत्वपूर्ण बन गया जैनुल आबेदीन कश्मीर का बड़ा ही लोकप्रिय शासक था उसने 15 शताब्दी में राज किया|
- भारत में जौनपुर और बंगाल दो प्रमुख राज्य थे| दिल्ली सुल्तान के गवर्नर ने इन राज्यों की स्थापना की|
- दक्षिण और सुदूर दक्षिण में बहमनी और विजयनगर राज्य की स्थापना हुई जब मुहम्मद के शासनकाल में सल्तनत का दक्षिणी भारत पर अधिकार कमजोर हो गया तब इन राज्यों का उदय हुआ| मुहम्मद बिन तुगलक के एक अधिकारी हसन गंगू बहमनी राज्य की नीव डाली| बहमनी राज्य के अंतर्गत कृष्णा नदी तक का दक्षिण प्रदेश का संपूर्ण उत्तरी क्षेत्र था|
- इस राज्य के दक्षिण में विजयनगर का राज्य था| हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों ने इस राज्य की नींव डाली| उन्होंने होयसल के राज्य के क्षेत्रों को विजय किया और सन 1336 ईसवी में अपने को विजयनगर राज्य का स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया| और उन्होंने हस्तिनापुर को अपनी राजधानी बनाया|

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now

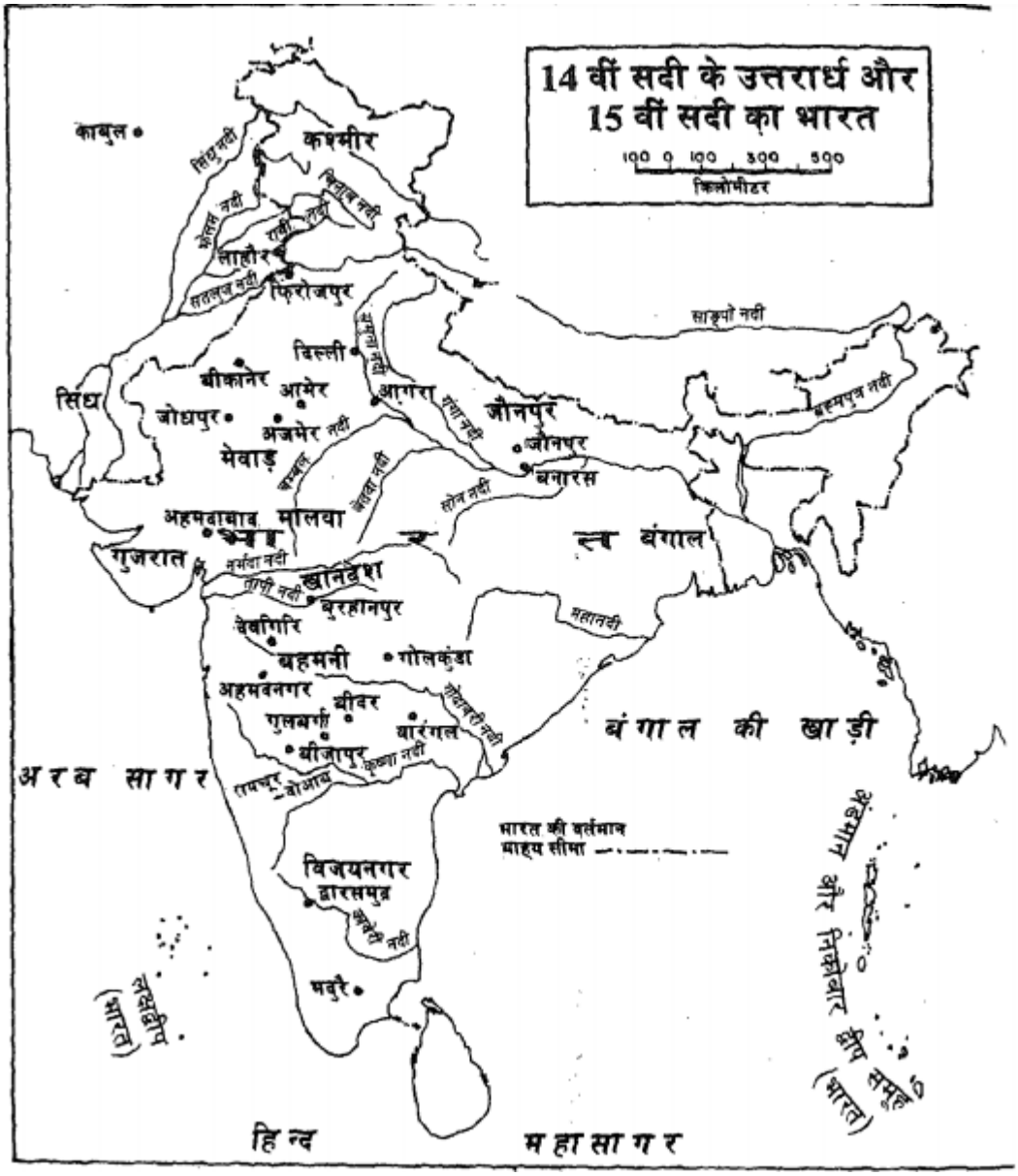

Follow us on Telegram
Gradeup PCS & Other State Exams
Gradeup: PCS & State Exams
137K subscribers
Subscribe Now